Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 10451837

Roll No. 23262000054
Total Mark 54/75.00

Exam BACHELOR OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
Subject A300301T - THEORETICAL AND ANALYTICAL STUDY

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5	8C	0/3				
1B	4/5	8D	0/3				
1C	4/5	8E	0/3				
1D	3/5	8F	0/3				
1E	3/5	9	0/15				
1F	3/5						
1G	4/5						
1H	4/5						
1I	4/5						
2	0/15						
3	0/15						
4	0/15						
5	11/15						
6	0/15						
7	10/15						
8A	0/3						
8B	0/3						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam: 11/01/2025 Shift: IInd Room No.: 28
Paper Code: A300301T Subject: Music Guitar Year/Sem.: III Sem
Name of Candidate: SHIVANGI DIXIT
Roll No. 2326200054

Signature of Candidate | Signature of Invigilator | COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures ______ Max. Marks ______
Total Marks in Words ______

A300301T
Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course: B.A. Fine Arts
Session: 2024-25 Year/Semester: III Sem.
Subject: Music Guitar

Paper Code: A300301T
Exam Date: 11012025
Name of Candidate: SHIVANGI DIXIT
Father's Name: RAM KUMAR DIXIT

महाविद्यालय का कोड College Code: KN015

परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: KN015

परीक्षा का प्रकार Type of Exam
संस्थागत Regular ● | भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex. Student ○
व्यक्तिगत Private ○ | बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
10451837

A300301T
Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या Enrollment Number: CSJMA23000116362

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2326200054

पेपर कोड Paper Code: A300301T

Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें। 2. बॉक्स में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में छिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subject Name and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no. corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex-Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

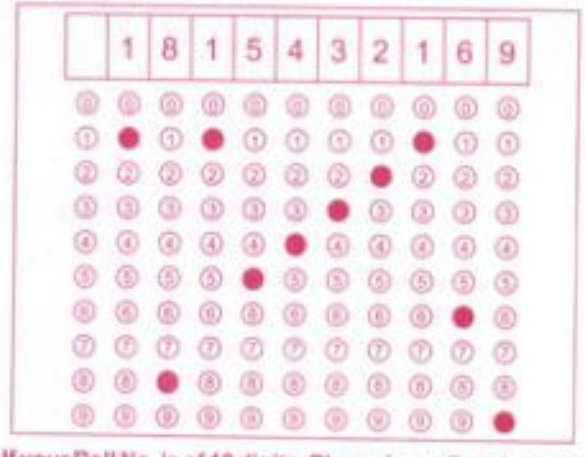

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns.

Paper Code

01

उत्तर सं० - 1 (a)

राग - भैरव

परिचय

राग	भैरव
थाट	भैरव
वादी	धैवत (ध)
सम्वादी	ऋषभ (रे)
गायन/वादन समय	प्रातःकाल 5 से 7 (संधिप्रकाश)
जाति	सम्पूर्ण - सम्पूर्ण
स्वर	रे, ध कोमल व अन्य शुद्ध
वर्जित स्वर	कोई नहीं
सम्प्रकृति राग	रामकली एवं कालिंगड़ा
प्रकृति	गम्भीर

आरोह - सा रे ग म प ध नि सां।

अवरोह - सां नि ध प म ग रे सा।

पकड़ - ग म ध ध प, म प ग म, रे रे सा ध नि सा।

राग विवरण - यह अपने थाट का आश्रय राग है। प्रातः काल 5 से 7 बजे के कारण इसे संधिप्रकाश राग कहते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

02

उत्तर सं० – 1(b)

कहरवा ताल (समपदी ताल)

परिचय

मात्रा – 08
विभाग – 2
ताली – 1 पर
खाली – 5 पर

ठेका

मात्रा –	1	2	3	4	5	6	7	8
बोल –	धा	गे	न	ति	न	क	धि	न
चिन्ह –	×				0			

दुगुन

मात्रा –	1	2	3	4	5	6	7	8
बोल –	धागे	नति	नक	धिन	धागे	नति	नक	धिन
चिन्ह –	×				0			

चौगुन

मात्रा -	1	2	3	4	
बोल -	धागिनति	नकधिन	धागिनति	नकधिन	|
चिन्ह -	X				

धागिनति	नकधिन	धागिनति	नकधिन
0			

उत्तर सं॰ - 1 (c)

मींड़ - किसी एक स्वर से दूसरे स्वर तक ध्वनि को बिना खंडित किये अर्थात खंडित किये बिना जाने को 'मींड' कहते हैं।

इसमें बीच के स्वर स्पर्श तो होते हैं, किन्तु वे पृथक सुनाई नहीं पड़ते अर्थात दोनों स्वर अटूट प्रतीत हो मींड़ कहलाता है।

सित[illegible] बाँए हाथ से तार खींचकर मींड बजाते हैं।

सितार में आघात अर्थात मिजराब से आघात के तुरन्त पश्चात तार खींचने को 'अनुलोम मींड' तथा तार खींचने के बाद मिजराब से आघात कर तार को पूर्व स्थान पर लाने को 'विलोम मींड' कहते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

मींड को उल्टे अर्द्धचन्द्राकार(⌒)से दर्शाते हैं।
जैसे – धसा अर्थात ध से सा मींड करने
पर बीच के स्वर स्पर्श तो होंगे,
किन्तु वे पृथक सुनाई नहीं पड़ेंगे।
मींड से राग में रंजकता बढ़ती है।

घसीट – घसीट का अर्थ है- घसीना अर्थात
सितार के तार पर शीघ्रता से
एक स्वर से दूसरे स्वर घसीट कर
ले जाने को घसीट कहते हैं।
अर्थात इसमें बीच
के स्पर्श तो हों, किन्तु वे कानों को सुनने
में अप्रिय ना लगें, उसे घसीट कहते हैं।
इसमें प्रारम्भ
और अंत के स्वर स्पष्ट सुनाई देते हैं।
जैसे – धनीसा में घसीट करते समय धनी
स्वर को घसीटते हुए सा स्वर तक
जायेंगे।
यह मींड से शीघ्र होता है अर्थात यह मींड
से अधिक शीघ्रता से बजाते हैं।
मींड और घसीट
में गति अर्थात चाल का अन्तर होता है।

उत्तर सं०- 1 (d)

२२ श्रुतियों में से चुनी गई वे 12 श्रुतियाँ जिन्हें गाना, बजाना एवं पहचानना सम्भव है, स्वर कहलाते हैं।

स्वर दो प्रकार के होते हैं।

स्वर

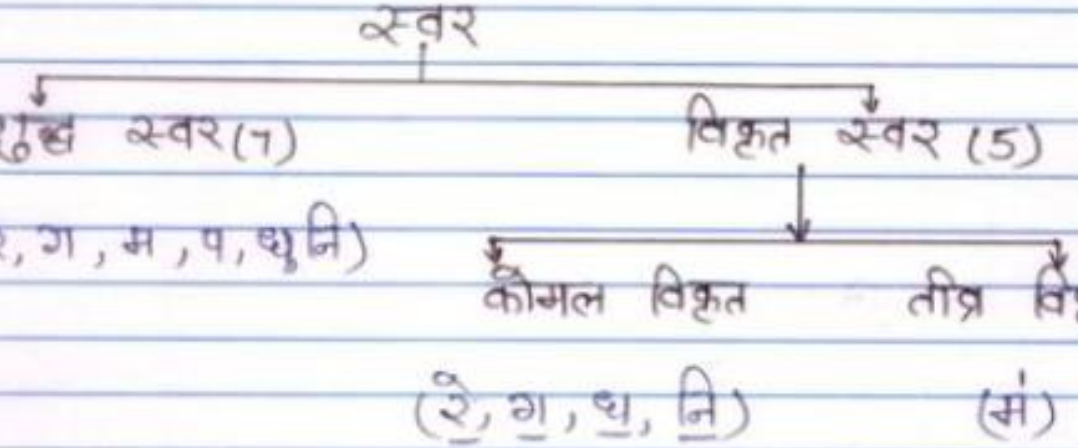

- शुद्ध स्वर (7)
  - (सा, रे, ग, म, प, ध, नि)
- विकृत स्वर (5)
  - कोमल विकृत (रे̱, ग̱, ध̱, नि̱)
  - तीव्र विकृत (मं)

विकृत स्वर – वे स्वर जो अपने शुद्ध स्थान से कुछ नीचे अथवा कुछ ऊपर गाये अथवा बजाये जाते हैं। 'विकृत स्वर' कहलाते हैं। विकृत स्वर को दो भागों में बाँटा गया है–

(a) कोमल विकृत (b) तीव्र विकृत

(a) कोमल विकृत – वे स्वर जो अपने शुद्ध स्थान से कुछ नीचे गाये अथवा बजाये जाते हैं, 'कोमल विकृत' स्वर कहलाते हैं, इनकी संख्या चार है – रे̱, ग̱, ध̱, नि̱

Do Not Write anything in this Portion

तीव्र विकृत – वह स्वर जो अपने शुद्ध स्थान से कुछ ऊपर गाया अथवा बजाया जाता है, उसे 'तीव्र विकृत' स्वर कहते हैं। इसकी संख्या एक है – मं

उत्तर सं०– 1(e)

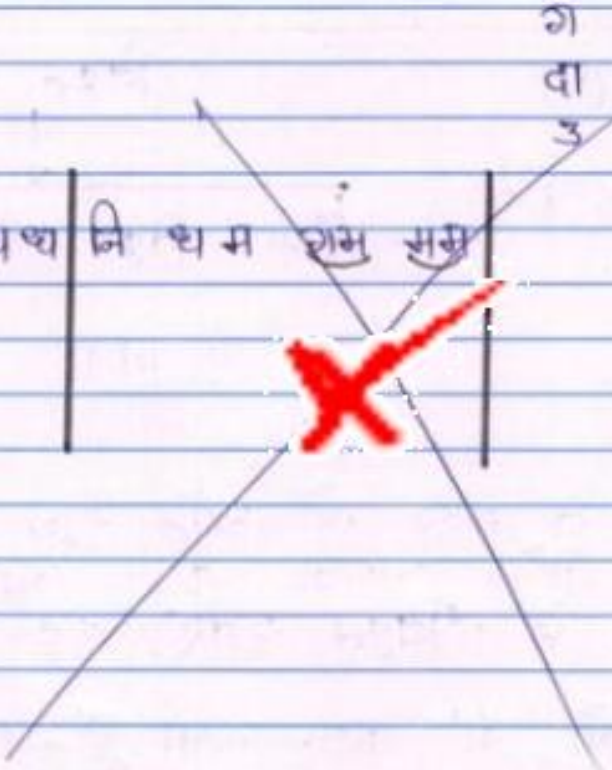

ग मम ध नी
दा दिर दा रा
३

सा ध ध | नि ध म गम सग |

Paper Code

07

उत्तर सं० - 1(f)

चारताल

चारताल परवावज की लोकप्रिय है। इसके अन्य नाम चन्दनाबा तथा बड़ा चौताल भी हैं। इसमें 12 मात्राएँ तथा 6 विभाग हैं। हर विभाग में 2 मात्राएँ होने के कारण यह समपदी ताल है।

मात्रा - 12
विभाग - 06
ताली - 1, 5, 9, 11 पर
खाली - 3, 7 पर

ठेका

मात्रा -	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल -	धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
चिन्ह -	x		0		2		0		3		4	

Paper Code

08

चौगुन

मात्रा –	1	2	3	4	5	6
बोल –	धाधा	दिंता	किटधा	दिंता	तिटकत	गदिगन
चिन्ह –	×		0		2	

7	8	9	10	11	12
धाधा	दिंता	किटधा	दिंता	तिट कत	गदि गन
0		3		4	

उत्तर सं०- 1 (g)

राग - केदार

परिचय

राग	केदार
थाट	कल्याण
वादी	मध्यम (म)
सम्वादी	षड्ज (सा)
समय	रात्रि का प्रथम प्रहर
जाति	औडव - षाडव
स्वर	दोनों मध्यम व अन्य शुद्ध
वर्जित स्वर	आरोह में रे व ग तथा अवरोह में ग

Paper Code

09

समप्रकृति राग	हमीर एवं कामोद
प्रकृति	करुण

आरोह - सा म, म प, ध प, नी ध सां।

अवरोह - सां नी ध प, मं प, म रे सा।

पकड़ - सा म, म प, ध प, मं पं म रे सा -

उत्तर सं० - 1 (b)

आरोह - स्वरों के चढ़ते के क्रम को आरोह कहते हैं अर्थात मध्य सा से तार सा तक के क्रम को आरोह कहते हैं।
जैसे - सा रे, ग म प ध नी सां

अवरोह - स्वरों के उतरते हुए क्रम को अवरोह कहते हैं। अर्थात तार सा से मध्य सा तक स्वर के उतरने के क्रम को अवरोह कहते हैं।
जैसे - सां नी ध प म ग रे सा

आरोह तथा अवरोह का क्रम एक दूसरे के विपरीत होता है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

उत्तर सं० - 1 (i)

राग की जाति – किसी भी राग में कम से कम पाँच तथा अधिक से अधिक सात स्वरों का प्रयोग होता है, इन स्वरों की संख्या से राग की जाति का पता चलता है। इसकी तीन जाति होती हैं –

सम्पूर्ण – 7
षाड़व – 6
औडव – 5

इन तीन से कुल 9 जातियां बनती हैं जो इस प्रकार हैं –

सम्पूर्ण - सम्पूर्ण	षाडव - षाडव	औडव - औडव
सम्पूर्ण - षाड़व	षाडव - सम्पूर्ण	औडव - सम्पूर्ण
सम्पूर्ण - औडव	षाड़व - औडव	औडव - षाडव

किसी भी राग की जाति उसमें प्रयुक्त हुए आरोह और अवरोह के स्वरों की संख्या पर पता लगाई जाती है।
जैसे – राग भैरव के आरोह तथा अवरोह में 7 स्वर हैं, अतः इसकी जाति सम्पूर्ण - सम्पूर्ण होगी।

उत्तर सं० – 1 (e)

रजाखानी गत

x	2	0	3
			ग मम धु नी दा दिर दा रा
सा - धु नी दा ऽदा रा	धु म गम गग रा दा दिर दिर	ग- गनी -नी सा- दा- दा -रा दा-	
			धु नीनी सा ग दा दिर दा रा
म म धु नी दा ऽ दा रा	ध म गग मम रा दा दिर दिर	ग- गनी नी- सा- दा- स्रा -रा दा-	

अन्तरा

x	2	0	3
			म गग म ध दा दिर दा रा
नी नी सां सां दा रा रा दा	धध नीनी सासा गग दिर दिर दिर दिर	नी- नीध -ग सा- दा- स्रा -रा दा-	
			सां नी नी ध दा रा रा दा
नी धु म ग दा रा दा रा	म म धु म दा रा दा रा	धु- गनी नी सा- दा- स्रा -रा दा-	

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

खण्ड - ब

उत्तर सं० - 5

संगीत के इतिहास को तीन भागों में बाँटा गया है -

प्राचीनकाल
मध्यकाल
आधुनिक काल

संगीत के इतिहास में पाँचवी से बारहवीं तक कई ग्रंथों की रचना हुई। जिसमें से कुछ इस प्रकार हैं -

1) भरत कृत नाट्यशास्त्र
2) दत्तिल कृत दत्तिलम
3) मतंग मुनि कृत बृहद्देशी
4) नारद कृत नारदीय शिक्षा
5) नारद कृत संगीत मकरन्द
6) जयदेव कृत गीत गोविन्द आदि।

1) भरत कृत नाट्यशास्त्र - कुछ विद्वान इसका रचना दूसरी से चौथी शताब्दी, कुछ चौथी शताब्दी तथा कुछ इस का रचना पाँचवी शताब्दी मानते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

इस ग्रन्थ के रचनाकार भरत मुनि हैं। इनके ग्रन्थ के बारे में कुछ तथ्य निम्नलिखित हैं।

* भरत ने षड्ज और मध्यम ग्राम का उल्लेख किया है। गंधार ग्राम को पूर्णतया छोड़ दिया है।

* षड्ज ग्राम से मध्यम ग्राम की रचना होती है। षड्ज ग्राम को प्राकृतिक ग्राम कहा

* दोनों ग्राम अर्थात षड्ज ग्राम से ७ मूर्च्छना तथा मध्यम ग्राम से ७ अर्थात कुल १४ मूर्च्छना मानी

* मूर्च्छना की ५ जातियाँ मानी, इस प्रकार १४ मूर्च्छना से १४x५ = 5[illegible] जातियाँ हुई

* भरत ने १८ जातियाँ मानी,

* सर्वप्रथम भरत ने २२ श्रुतियाँ मानी।

* कुल स्वर ९ माने ७ शुद्ध तथा २ विकृत

सा रे ग म प ध नि + अंतर गंधार + काकली निषाद

* भरत को जाति गायन का जन्मदाता कहा जाता है क्योंकि इन्होंने जातिगायन की शुरूआत की थी।

* भरत ने जाति के १० लक्षण माने — ग्रह, अंश, न्यास, मन्द्र, तार, अपन्यास, औडत्व, षाडवत्व,

Do Not Write anything in this Portion

* भरत ने 7 स्वर, 22 श्रुतियाँ, 14 मूर्च्छना, जाति के 10 लक्षण माने।

दत्तिल कृत दत्तिलम — दत्तिल के विषय में इनके ग्रन्थ दत्तिलम के अलावा अन्य कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती है।

भरत के 100 पुत्रों में से दत्तिल एक का नाम आता है, अतः यह माना जाता है कि दत्तिल भरत के पुत्र थे। इनके ग्रन्थ के बारे में कुछ तथ्य निम्नलिखित हैं —

* दत्तिल ने गंधार ग्राम का पूर्ण उल्लेख किया है अर्थात दत्तिल ने षड़ज, मध्यम तथा गंधार तीनों ग्रामों का उल्लेख किया है।
* इन्होंने भरत के समान 22 श्रुतियाँ मानी
* भरत के समान ही 18 जातियाँ मानी
* जाति के 10 लक्षण माने।
* सम्वादी स्वरों की दूरी 4 श्रुति तथा विवादी स्वरों की दूरी 2 श्रुति की मानी।
* इन्होंने भी सप्त स्वर संस्था भरत के समान मानी।

खण्ड - स

उत्तर सं० - 7

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ

जन्म — 8 अक्टूबर 1862
जन्म स्थान — ब्राह्मण बड़िया / ब्राह्मण बेरिया जिले के शिवपुर नामक छोटे से गाँव में (जो आज बांग्लादेश में है)

पिता — साधु खाँ (हुसैन खाँ)
पत्नी — मदीना बेगम (मदन मंजरी)
गुरू — हाबूदत्त से – वायलिन तथा बेला)
नन्दूबाबू से – तबला व मृदंग
मु० इम्मन खाँ से — ध्रुपद
हाफिज खाँ के भाई से — सितार
इसके अलावा उ० अकबरअली खाँ तथा वजीर खाँ से भी शिक्षा प्राप्त की।

पुरस्कार — 1954 में संगीत नाटक अकादमी
[illegible] शान्ति निकेतन से 'देशिकोत्तम'
1944 – भातखंडे संगीत विश्वविद्यालय से 'संगीताचार्य'

1958 – पद्मभूषण
1971 – पद्मविभूषण

मृत्यु — 6 सितम्बर 1972

Do Not Write anything in this Portion

ॐ अलाउद्दीन खाँ का जन्म 8 अक्टूबर 1862 को शिवपुरा नामक ग्राम में हुआ था।

इनके पिता ~~किसान~~ का नाम साधू खाँ था तथा वे किसान थे। इनके पिता सरल स्वभाव के थे।

उस समय त्रिपुरा के उस्ताद कासिम अली खाँ रबाब बजाया करते थे। इनके पिता उनका रबाब सुनने के लिए घंटों इनके घर के पीछे बैठे रहते थे। एक बार कासिम अली खाँ के नौकर ने इन्हें देख लिया तथा कासिम अली खाँ के सामने ले गये। उन्होंने पूछा तू कौन है? तो इन्होंने कहा मेरा नाम साधू खाँ तथा मैं एक किसान हूँ। मुझे संगीत की कोई जानकारी नहीं है परन्तु मुझे इसे सुनना पसन्द है। क्या आप मुझे सिखा सकते हैं तो इन्होंने कहा मैं सिर्फ अपने खानदान के लड़कों को रबाब सिखाता हूँ तुम चाहो तो सितार सीख सकते हो सकते हो।

अतः जब अलाउद्दीन खाँ के पिता रियाज करते थे तो ये उनके पास घुनघुनाया करते थे, उस समय इनकी उम्र मात्र 3 या 4 वर्ष की थी।

8 वर्ष की उम्र में इन्हें कलकत्ता जाने की धुन सवार हो गयी। ये कलकत्ता पहुँच गये।

Paper Code

17

इन्होंने 33 वर्षों तक वजीर खाँ से शिक्षा प्राप्त की तथा गुरू के आशीर्वाद से 1911 में कलकत्ता पहुँचे।

ये मुसलमान थे पर शाकाहारी थे और उच्च स्वभाव के थे जिस कारण कई शिष्यों को शिक्षा दी

~~शिष्य~~ शिष्य – पन्नालाल घोष
रविशंकर
अली अहमद आदि

तानसेन से

DO NOT write anything in this portion

Paper Code

18

Do Not Write anything in this Portion

X

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

X

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

X

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

X

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion